।। अक्ल के गुलाम ।।

08 June, 2008.

मैं उस दिन अपने ऑफिस में बैठा अपने कम्प्युटर से कुछ कुण्डलियां जमा कर रहा था । ये कुण्डलीयां वो थी जिनके लिये मैंने फलादेश किया था और मूल रुप से राहु-केतु से संबंधित थी । दरअसल मैंने किसी पुस्तक में पढ़ा था कि राहु -केतु तुरन्त ही गुजरे हुए पूर्व जन्म का फल उस भाव से करते हैं जंहा वो बैठे होते हैं । हालाकि भारतीय दर्शन अनुसार पूर्व के कई जन्मों के फलों से ही हमारा भाग्य बनता हैं । परन्तु मैंने पढ़ा था कि राहु-केतु विशेषयता तुरन्त ही गुजरे हुऐ पूर्व जन्म का फल करते हैं । उससे पहले के जन्मों का फल किसी और तरिके से भाग्य बनकर प्रकट होता होगा परन्तु राहु-केतु तुरन्त ही गुजरे जन्म का फल करते हैं, ये पढ़कर मैं इसे व्यवहारिक दृष्टिकोण पर परख लेना चाहता था । इसलिये मैं अपने कम्प्युटर पर राहु-केतु वाली कुण्डलीयां एकत्र कर रहा था और साथ साथ देख भी रहा था कि किस कुण्डली में ये अशुभ और किसमें ये दोनो ग्रह शुभ फल दे रहे हैं ।

मैं समझना चाहता था कि जंहा ये दोनो ग्रह शुभ फल दे रहे तो इसका मतलब होगा कि पूर्व जन्म में उस व्यक्ति के कर्म अच्छे रहे होगें और अगर कंहि अशुभ फल दे रहे होगें तो अवश्य ही उस व्यक्ति के पूर्व जन्म के कर्म बुरे रहे होगें । मैंने कई जातको के लिये फलादेश किया था और मुझे उनके विषय में बहुत कुछ पता था इसी का लाभ उठाने के लिये मैंने कुण्डलीयां परखने का मन बनाया था और राहु-केतु के पूर्व जन्मों के फल को व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखना चाहता था ।

इसके साथ साथ ही आने वाले कुछ समय में सिंह राशि में शनी-मंगल की युति बनने जा रही थी और मैंने पढ़ा था कि जिनकी कुण्डली में शनी-मंगल की युति होती हैं वे लोग कुटील स्वभाव के, प्रभुत्व जमाने वाले, अपना महत्व दर्शाने वाले और दबगंता का बेवजह इस्तेमाल करने वाले होते हैं । अब जिस भाव में ये युति बनेगी उस भाव से फल अलग अलग हो सकता हैं परन्तु कुटीलता उनके किसी ना किसी कार्य से प्रकट हो ही जाती हैं । जो भी हो मुझे इसे व्यवहारिक दृष्टिकोण से समझना था । इसलिये मैं एसी कुण्डलीयां भी तलाश रहा था जिनमें शनी-मगंल की युति बनी हुई हो ।

मैं कम्प्युटर के कुण्डली साफ्टवेयर से राहु-केतु की शुभ-अशुभ वाली कुण्डलीयों का पी डी एफ फाइल बनाता और उन्हे अलग अलग फोल्डर में रखता जा रहा था । साथ साथ शनी-मंगल वाली कुण्डलीयां मैं एक तीसरे फोल्डर में रखता जा रहा था । हालाकि था बहुत मेहनत वाला कार्य परन्तु मैं इमानदारी से कर रहा था । कि तभी मेरे ऑफिस का फोन बजा । मैंने फोन उठाकर तुरन्त हैलो कहा ।

जवाब में किसी ने कहा - "राधे-राधे" ।

मैंने तुरन्त आवाज को पहचान लिया । वो मेरे एक यजमान अथवा क्लायंट उदय अग्रवाल की आवाज थी ।

मैंने सहज आवाज में पुछा - "हाँ, उदयजी बतायें, कैसे है" ?

उधर से उदय फिर बोला, - "राधे-राधे" ।

मैंने कहा,- "हाँ हाँ, बतायें ना कैसे याद किया ?

अचानक उसकी आवाज में तीखापन उभर आया और वो बोला, - "आप राधे, राधे क्यों नही बोलते ? ये कोई खराब शब्द हैं क्या ?

अब मैं सावधान हुआ । उसके स्वभाव को मैं जानता था वो बहुत कांईया और धोखेबाज था । उसने अभी अभी कृष्णकेतु पंथ अपनाया था और मधुकृष्णा नामक कृष्ण भक्त का अनुयायी हो गया था । तबसे वो बात बात में राधे-राधे बोला करता था ।

मैं जानता था कि अगर मैं "राधे राधे" नही बोलूंगा तो वो इसी बात पर बहस करना आरंभ कर देगा । इसलिये मैं तुरन्त बोला, "राधे-राधे" ।

उस दिन वो सन्तुष्ट हो गया और मुझसे राधे-राधे बुलवा कर एक जीत का अहसास लेकर वो शाँत हो गया ।

परन्तु मैं उसके बाद सोच में पड़ गया ।

धर्म के नाम पर ये दबाव और ब्लैक मैंलिंग कंहा तक ठीक थी । राधे राधे बोलने से मुझे हर्ज नही था परन्तु युँ शब्दजाल में मुझे फंसाना उसके कुटील होने को दर्शाता था । मैं उसे जानता था वो बिल्कुल भी धार्मिक नही था । उसने कई लोगो का दिल दुखाया था, वो अपने मतलब के अलावा किसी और चीज को नही पहचानता था । सब लोग उसे मतलबी और स्वार्थी के रुप में जानते थे । उसकी बातों का कोई विश्वास नही करता था । उसने धन अर्जित करने के लिये हर प्रकार की निति का इस्तेमाल किया था । धन के अलावा उसका कोई धर्म नही था । वो एक क्लर्क की नौकरी करके शहर का नामी धनी व्यक्ति बना था । उसने अपनी अक्ल का भरपुर इस्तेमाल किया था । वो अक्ल से धन अर्जित करने का कार्य किया करता था, बड़े लोगों और साधन सपंन्न लोगों के आगे वो झुक जाने से उनके पैर छु लेने से बिल्कुल भी गुरेज नही करता था ।

हमारे शास्त्र कहते हैं कि अक्ल अथवा बुध्दी क्लेश का कारण हैं और इसके लिये चन्द्र की कथा वो बताते हैं जिसमें चन्द्र ने ज्ञान अर्जित करने के लिये गुरु बृहस्पती का सहयोग लिया और बाद में गुरु पत्नी तारा का हरण कर लिया और फलस्वरुप युध्द हुआ और बुध की उत्पती हुई । बुध, बुध्दी का कारक हैं और इससे क्लेश उत्पन्न होता हैं । तभी उसकी उत्पत्ती ने युध्द को प्रकट किया ।

मैं सोचने लगा । क्या साधारण व्यक्ति भी इससे प्रभावित होता हैं ? मेरे पास उदय अग्रवाल की कुण्डली थी । मैंने उसकी कुण्डली का विश्लेषण करनी की सोची । जब मैंने उसकी कुण्डली खोली तो मैं हैरान रह गया । उसकी कुण्डली में चतुर्थ भाव में शनी-मंगल का योग था । ये स्पष्ट संकेत था कि वो अव्वल दर्जे का कुटील था । चतुर्थ भाव, मन का होता हैं और जो व्यक्ति मन से ही कुटील हो उससे पार पाना तो अंसभव था ।

जो व्यक्ति मन से ही कुटील हो, जो व्यक्ति अक्ल का भरपुर इस्तेमाल करता हो, जो व्यक्ति धन के अलावा किसी और बात को जानता तक ना हो, जिस व्यक्ति की असलियत हर कोई जानता हो, वो व्यक्ति धनवान कैसे बन सकता हैं ? बुध्दी ने उसके आसपास क्लेश क्यो नही उत्पन्न किया ? उसकी कुटीलता ने उसे सफल कैसे बना दिया ? धन के लालची व्यक्ति को कैसे सुख प्राप्त हो सकता हैं ? शास्त्र जो कहते हैं, क्या वो सच नही हैं ?

मैंने अब तक उससे हुई मुलाकातों को याद किया, बहुत पहले से वो मुझसे मिलता रहा था । वो कई बार अपनी नौकरी से बर्खास्त किया जा चुका था परन्तु हर बार वो राजनितिक और पहुंच वाले लोगों का सहयोग हासिल करके फिर से नौकरी पर बहाल हो जाता था । अपने विभाग में रिश्वत का जो गंदा नाला उसने बहाया था । उससे उसका विभाग बहुत विवादों में फंसा था और उसकी वजह से कई बड़े अफसर बर्खास्त हो गये थे । वो जब भी बर्खास्त हुआ था तब तब मेरे पास आया था । मेरी दक्षिणा अथवा फीस देने की उसने कभी नही सोची थी और हर बार वो बोलता था कि अगली बार वो मेरी फीस अवश्य देगा परन्तु वैसी अगली बारी कभी आयी ही नही । मैं हर बार उसे उसकी कुण्डली से उसके शुभाशुभ समय के विषय में बताता था ।

वक्त गुजरा, फिर उसके दो बेटे जवान हो गये और उनके रिश्तों की बात चलने लगी । अब समस्या ये थी उसके साथ कोई रिश्ता जोड़ने को तैयार नही था । इसमें उसका अपना व्यक्तित्व तो आड़े आता ही था परन्तु उसके दोनो बेटे भी नालायक सिध्द हुऐ थे । एसे में उसने फिर अक्ल का इस्तेमाल किया और कृष्णकेतु पंथ को अपना लिया । अब वो बात बात पर राधे राधे बोलता था और स्वय को धार्मिक अथवा सज्जन जताने का यत्न किया करता था । कुष्णकेतु पंथ के मुखिया मधुकृष्ण को भी उसने विवादों में फसां दिया । अपनी क्लर्की की नौकरी के दौरान रिश्वत में सिध्दहस्त उदय ने कृष्णकेतु पंथ में भी रिश्वत का गंदा नाला चलवा दिया । उसने जरायम पेशा लोगों को वहा प्रवेश दिलवा दिया और पंथ में उन्हे विशेष ओहदे दिलवा दिये । फिर वंहा कृष्ण जन्माष्टमी को रास लीलायें होने लगी और एक दिन एसी ही रासलीला में व्यस्त कृष्णकेतु के मुखिया मधुकृष्ण को पुलिस पकड़ने आन पहुची । पता चला कि वंहा किसी ने शहर के जाने माने धन्ना सेठ की बेटी से बलात्कार कर डाला था । यंहा भी उदय अग्रवाल ने अक्ल का इस्तेमाल किया और अपने जरायम पेशालोगो की सहायता से मधुकृष्ण को छुड़वाया और धन्ना सेठ को धमकी दिलवायी । केस रफादफा हो गया और कृष्णकेतु पंथ का मुखिया मधुकृष्ण उदय का मुरीद बन गया । अब पंथ का मुखिया उदय को माना जाता था और मधुकृष्ण को उदय के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली ।

मैंने मेहसूस किया कि उसकी कुण्डली में बृहस्पती अथवा गुरु बलवान नही था इसलिये वो कायदे कानून की धज्जिया उड़ाया करता था । ना तो कायदा कानून उसने घर में चलाया था और ना ही कायदे कानून को वो बाहर मानता था । वो तो रिश्वत लेनेदेने में और धन अर्जित करने के लिये सरेआम कायदा तोड़ना जानता था । घर में किसी कायदे कानून के ना होने से उसके बेटे भी आवारा और नालायक सिध्द हो रहे थे, और इस बात की उसे जरा भी पर्वाह नही थी उल्टा पैसे देकर उसने ही अपनी संतान को आवारा और अय्याश बना दिया था । उसका चन्द्र बलवान था इसलिये वो अपने मन की करता था । जिस बात को वो सही मानता था उसे ही वो अपने मनमाने ढंग से करता था ।

समय के साथ उसने अपनी कुटीलता से बहुत विवाद उत्पन्न किये और अपने आपको बचाकर धन अर्जित करता रहा । फिर कालातंर में उसके चर्चे सभी और फैले परन्तु धीरे धीरे उसका स्वास्थ खराब रहने लगा और अब वो डरा डरा रहने लगा । उसे वहम होने लगे और अपने आपको बड़ी बीमारियों से ग्रसीत समझने लगा । एसे ही एक समय में वो मेरे पास आया था । मैंने उसकी कुण्डली देखी तो पाया कि उसका लग्न बलवान था अर्थात वो बीमारी से ग्रस्त नही था परन्तु वो था कि इस बात को मानता ही नही था । फिर वो कई और ज्योतिषियों के पास भी गया और डॉक्टर्स के भी चक्कर लगाता रहा । जोकि सिलसिला आजतक चल रहा था । अब वो हर बात की दवाई लेता था । उसे खाना भी हजम करने के लिये औषधि की आवश्यकता होती थी । सिर दर्द, पेट दर्द, ब्लड प्रेशर और ना जाने कैसी कैसी दवाईयाँ वो लेता था । मैं हैरान था कि उसे कोई बीमारी नही थी परन्तु वो मेरी बात मानता ही नही था ।